(2) उरांव जनजाति

- उरांव जनजाति भारत में चौथी सर्वाधिक जनसंख्या वाली एवं झारखंड की दुसरी सबसे बड़ी जनजाति है। (झारखंड की कुल जनजातियों का 18.14 प्रतिशत उरांव जनजाति है)
- उरांव लोग अपने आपको कुरूख कहते है तथा इन्हें धांगर भी कहा जाता है ।
- उरांव जनजाति भारत के पूर्वी भाग मे फैले हैं जिसमे अधिकांश झारखंड के छोटानागपुर पठार मे केन्द्रित है ।
- उरांव जनजाति पूर्वोतर भारत के चाय बगानों मे मजदूर बन गए है । वे झारखंड के बाहर असम , बंगाल , उड़ीसा , मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश मे बसे है ।
- उरांव जनजाति का झारखंड मे सर्वाधिक जमाव दक्षिणी छोटानागपुर तथा पलामू प्रमंडल मे है ।
- उरांव जनजाति का झारखंड मे निवास रांची , गुमला , सिमडेगा , लोहरदगा , पलामू , लातेहार , गिरिडीह , धनबाद , जामताड़ा , दुमका जिले मे बसे है ।
- उरांव जनजाति प्रजातीय दृष्टि से द्रविड़ प्रजातीय समूह मे आते है ।
  - इनकी त्वचा का रंग गहरा भूरा , काले बाल , काली आंखे , चौड़ी नाम , लम्बा सिर और कद चौड़ी नाम , लम्बा सिर और कद चौड़ा

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

सामाजिक व्यवस्था

- उरांव जनजाति मे 14 प्रमुख गोत्र है ।

1. लकड़ा , 2. एक्का , 3. तिर्की , 4. टोप्पो , 5. कुजुर , 6. खलखों , 7. केरकट्टा , 8. बांडी , 9. लिंडा , 10. मिंज , 11. रूंडा , 12. गारी , 13. किस्पोट्ट , 14. बेक

- उरांव जनजाति मे गोदना गोदवाने की प्रथा है । जिसमे मुख्यतः महिलाएं ऐसा करती है ।

धुमकुड़िया

- युवक–युवतियों के शिक्षण प्रशिक्षण के लिए महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है । यहां युवक युवतियों के गीता संगीत , नृत्य , शिकार आदि रीति–रिवाजो व परम्पराओं का शिक्षण प्रशिक्षण दिया जाता है।
- युवक व युवतियो के लिए अलग–अलग प्रबंध है ।
- युवकों के लिए जोंख–एड़पा (धांगड़–कुड़िया)
- युवतियो के लिए पेल–एड़पा
- जोंख एड़पा का मुखिया – महतो/धांगर
- पेल पड़पा का मुखिया – बड़की धांगरिन
- धुमकुड़िया की सदस्यता 10–11 वर्ष की उम्र मे मिलती है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- धुमकुड़िया मे प्रवेश का समय सामान्यतः सरहुल त्योहार में प्रत्येक तीन वर्ष में होता है ।
- अब यह व्यवस्था समाप्ती के कगार पर है जिसका मुख्य कारण है इसाई धर्म का प्रचार प्रसार करना है ।
- उरांव जनजाति मे समगोत्रीय विवाह निषिद्ध है ।
- आम तौर पर एक विवाह की प्रथा है ।
- बाल विवाह की प्रथा नही है ।
- सर्वाधिक प्रचलित विवाह – आयोजित विवाह
- इस विवाह मे वर पक्ष को वधु मुल्य देना पड़ता है ।
- उरांवो मे पहले सेवा विवाह का प्रचलन था , जो अब समाप्त होने के कगार पर है ।
- विधवा विवाह तथा एंव तलाक प्रथा का प्रचलन है ।
  - उरांव गांव का मुखिया – महतो
  - उरांव ग्राम पंचायत –पंचोरा

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

धर्म

- सबसे प्रमुख देवता – धर्मेश/धर्मी
- धर्मेश को जीवन तथा प्रकाश देने मे सुर्य के समकक्ष माना जाता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- पहाड़ देवता – मरांग बुरू
- ग्राम देवता – ठाकुर देव
- सीमांत देवता – डीहवार
- कुल देवता – पूर्व जात्मा
- धार्मिक प्रधान – पाहन – सहयोगी –पुजार
- उरांवो का मुख्य पुजा स्थल – सरना
- पूर्वजों की आत्मा का निवास स्थान – सासन
- ये लोग तांत्रिक एवं जादुई विद्या पर विश्वास करते है ।
- फुरसत के क्षणों मे शिकार , मछली पकड़ना , पशुपालन एवं हस्तकला
- बतख , मुर्गा , भेड़ , बकरी , सुअर , भैंस पालन
- मुख्य पेय – हड़िया

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

(3) मुण्डा जनजाति

- भाषा – मुण्डारी/होड़ोजगर
- मुण्डा संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है विशिष्ट व्यक्ति या गांव का राजनीकि अर्थ
- प्राचीन हिन्दु उन्हे मुण्डा नाम से पुकारते थे ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- मुण्डाओं को कोल भी कहा जाता है । मगर वे कोल कहा जाना पसंद नही करते है ।
- मुण्डा अपने आप को ' होरो को ' भी कहते है , जिसका अर्थ होता है मनुष्य
- झारखंड की तीसरी सबसे अधिक जनसंख्या (14.56 प्रतिशत) वाली जनजाती मुण्डा है।
- प्रजातीय दृष्टिकोण से मुण्डा जनजाति प्रोटोऑस्ट्रलाइड प्रजातीय समूह मे आते है । इनकी भाषा मुंडारी ऑस्ट्रोएसियाटिक भाषा परिवार की भाषा है ।
- मुण्डाओ का निवास मुख्यतः रांची , हजारीबाग , पलामू , सिंहभूम मे है
- मुण्डा जनजाति का सघन जमाव रांची मे है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

समाजिक व्यवस्था

- रिजले के अनुसार 340 गोत्र
- मुण्डा जनजाति के प्रमुख गोत्र – टूटी , मुण्डू, सोई ,कछुआ , नाग , हरेन्ज , बण्डो , पुरथी , कण्डीर , ोटी रूण्डा , सुरील , है , बारिया , भेंगरा, बोडोसी , हरूमसुक , हसारा , हेम्ब्रम , गोमी , बुरूय , चम्पी , हन्सा , बाबा , साल , कमल
- मुण्डा समाज 5 भागों मे वर्गीकृत है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

1. ठाकुर , 2. मानकी , 3.मुण्डा , 4. बाबू भंडारी , 5. पातर

- समगोत्रीय विवाह वर्जित है ।
- सामान्यतः एक ही विवाह की प्रथा
- युवा गृह – गितिओड़ा
- हिन्दुओ के प्रभाव मे आकर मुण्डा जनजाति बाल विवाह का प्रचलन शुरू हो गया ।
- मुण्डाओं का सर्वाधिक प्रचलित विवाह (आयोजित विवाह)

- अन्य महत्वपूर्ण विवाह विधियां
  - राजी खुशी विवाह
  - हरण विवाह
  - सेवा विवाह – ससुर के घर सेवा द्वार बधु मुल्य
  - हठ विवाह – वधु वर के यहां बालात प्रवेश कर रहने लगती है ।
  - सगाई – विधवा विवाह तथा परित्यागता विवाह
  - स्त्री तलाक दे तो उसे कुरी गोनोंग टाका (वधु–मुल्य लौटाना पड़ता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

महत्वपूर्ण नामकरण

- विवाह – अरण्डी
- गोत्र – कीली
- ग्राम प्रधान – मुण्डा
- ग्राम पंचायत – हातू
- पंचायत का प्रधान – हातू मुंडा
- कई गावों से मिलकर बनी पंचायत – परहा
- पंचायत स्थल – अखड़ा
- परहा पंचायत प्रधान – मानकी
- खुंटकटी भूमि प्रधान – मानकी
- खुंटकटी भूमि – मुण्डाओं द्वारा निर्मित भूमि
- साकमचारी – तलाक
- मुण्डा परिवार एकल तथा पितृसतात्मक तथा पितृवंशीय होता है ।
- सोमा सिंह मुण्डा ने मुण्डा जनजाति को 13 उपशाखाओं मे विभक्त किया ।
- सोसोबोंगा – प्रसिद्ध लोककथा
- प्रमुख त्योहार – सरहुल , करमा , सोहराय , ब–परब , बुरू पर्व (दिसम्बर) , यागे पर्व , फागु , जतरा
- पुरूषो द्वारा धारण किया जाने वाले वस्त्र – बटोई/करेया

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- महिलाओं द्वारा धारण किया जाने वाले वस्त्र – वस्त्र–पारेया
- मुण्डा जनजाति परंपरागत रूप से प्रवास करते रहे है , जो भारत के कई राज्यो से होते हुए झारखंड मे ओमेडंडा (बुरमु) मे आकार बस गए ।
- प्रमुख त्योहार – सरहुल , करमा , सोहराय इत्यादि ।
- पशु पुजा हेतू आयोजित त्योहार – सोहराय

अर्थव्यवस्था

- कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर है
- मुण्डा स्थाई कृषक है
- शिकार एवं मछली पालन भी करते है ।
- प्रमुख पेय – रानू (तुलसी जल के समान मानते है) तथा हड़िया (गंगा जल के समान मानते है)
  - आर्थिक उपयोगिता के आधार पर इसकी भूमि तीन प्रकार का होता है–

1. पंकु – हमेशा उपज देने वाली भूमि
2. नागरा – औसत उपज वाली भूमि
3. खिरसी – बालू युक्त भूमि

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

धर्म

- सबसे प्रमुख देवता – सिंगबोगा
- ग्राम देवता – हातु बोंगा
- गांव की सबसे बड़ी देवी – देशाउली
- कुल देवता – खूंट हंकार / ओड़ा बोंगा
- पहाड़ देवता – बुरू बोंगा
- मुण्डाओं का पुजा स्थल – सरना
- धार्मिक प्रधान –पाहन
- पाहन का सहायक – पुजार/पनभरा
- ग्रामिन पुजारी – डेहरी
- झाड़–फुक करने वाले – देवड़ा
- दफनाने की प्रथा अधिक प्रचलित
- जहां पूर्वजों की हडिया दबी होती है उसे सासन कहते है ।
- पूर्वजो की स्मृति मे शिलाखंड रखा जाता है , जिसे सासन दिरि या हडगडी कहते है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888